श्री चन्द्रप्रभ

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री चन्द्रप्रभ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास, २०२०, शिवपुरी
लागत मूल्य	:	१५/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	१. संजीव कुमार जैन 2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.) सम्पर्क–9412811798, 9412623916 २. निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

<u>पुण्यार्जक</u>

कु. अनविका के जन्मदिवस के उपलक्ष में
कु. रेखा जैन चौधरी (असिस्टेंट मेनेजर अक्सिस बेंक)
चौधरी ऋषभ जैन-श्रीमती शिमला जैन
चौधरी अरविंद जैन-श्रीमती गरिमा जैन एवं
समस्त चौधरी परिवार शिवपुरी (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह चैतन्य चमत्कारी श्री चन्द्रप्रभ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**श्री चन्द्रप्रभ ऋद्धि विधान एवं दीपं अर्चना**' की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

राजेश, अशोक, अर्चित, पुनीत, नमन, विशाल, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहनें प्राची, ऐश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–२, सब– रोज कराओ रे॥ प्रासुक...

१. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–२, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...

२. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–२, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...

३. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–२, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...

४. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–२, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...

५. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–२, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...

६. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–२, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

१. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

२. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

३. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

४. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुये मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

५. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

६. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

७. अभिषेक आरती पूजायें, सौभाग्य पुण्य से मिल पायें।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पायें मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

भजन

(लय : चाँदी जैसा रूप है...)

चंदा जैसा रंग है तेरा, चंदा जैसा नाम।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥
महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मीमति के लाल।
स्वर्गधाम से भू पर आए, हरते जग जंजाल॥
हमको निज की निधियाँ देकर, कर दो मालामाल।
पूज्य तुम्हीं हो भगवन् प्यारे, साँचे तीरथ धाम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको...॥
तुमको यह दुनियाँ ना भाई, भाई मुक्ति नार।
उससे चले स्वयंवर रचने, चले मोक्ष के द्वार॥
एक तुम्हीं हो दूल्हे उसके, बाराती संसार।
हमको भी प्रभु शामिल करके, ले चलिए शिवधाम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको...॥
जिसके दिल में तुम वसते वो, चले मोक्ष की ओर।
हृदय हमारे कब आओगे, प्यारे चाँद चकोर॥
तारण तरण जहाज तुम्हीं हो, थामो सबकी डोर।
अर्जी सुन के शुद्ध बना दो, अपनी आतमराम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको...॥
तुम बिन कोई नहीं हमारा, ठुकराओ ना नाथ।
हम हैं भूले भटके स्वामी, रख लो अपने साथ॥
समाधिमरण को मुक्तिवरण को, सिर पर रख दो हाथ।
'सुव्रत' भी वो सब पा जाएँ, जो पाए जिन-राम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको...॥

===

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख-सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगन्धी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २३ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

वर्तमान की चौबीसी में, चन्द्रप्रभु जी प्यारे।
जगह-जगह पर जिनके अतिशय, रहे जिनालय न्यारे॥
जिनकी चर्चा आज विश्व में, सबके मुख पर होती।
जो चट्टान चटक कर चमके, जला रहे जिन-ज्योति॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

श्री चैतन्य चिदातम के जो, चन्द्रोदय हैं साँचे ।
जिनकी महा कृपा करुणा से, खुशियों से जग नाँचे ॥
जो ज्ञानामृत की वर्षा से, दुख संताप मिटाते।
पुण्य चन्द्रमा को विकसित कर, कर्म-कलंक नशाते॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

चन्द्रपुरी के चाँद चकोरे, हम सबके भगवान् रे।
चाँदी जैसा रंग है जिनका, चाँदी जैसा नाम रे॥
चाँदी-चाँदी सबकी करते, हम तो करें प्रणाम रे।
चारु चन्द्र सम हम भी चमकें, पाकर आतमराम रे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
चन्द्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

===

श्री चन्द्रप्रभ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

(लघु चौपाई)

कर्म इन्द्रियाँ अपनी जीत, बनते जिनवर दें संगीत।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१॥

अवधिज्ञान का पा आलोक, शोक हरें प्रभु करें अशोक।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२॥

परमावधि का मिला प्रकाश, किया पाप का सत्यानाश।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३॥

सर्वावधि से पाकर सार, स्वामी छोड़ दिए संसार।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४॥

पाकर अनन्त-अवधिज्ञान, ऋद्धि-सिद्धि का दें वरदान।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥५॥

कोष्ठबुद्धि का पाकर धाम, सब को खोले सुख के धाम।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥६॥

बीजबुद्धि का पा भण्डार, मोक्षमार्ग का दे आहार।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥७॥

पदानुसारी पाकर ज्ञान, क्रम-क्रम से हरते अज्ञान।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥८॥

संभिन्नश्रोती ऋद्धि महान, पाकर करें जगत कल्याण।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥९॥

(सखी)

मन भजले रे जिनराज, श्री चन्द्रप्रभुजी स्वामी।
हम करते नमोऽस्तु आज, सुख देना अन्तर्यामी॥
हो खुद से खुद उपकारी, पर जग के हो हितकारी ।
जय स्वयंबुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१०॥

जग देख हुए वैरागी, फिर बन बैठे निज-रागी।
प्रत्येक बुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥११॥

जो पर से पाकर शिक्षा, जीते हर एक परीक्षा।
बोधित्व बुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१२॥

जो मन के सरल विषय को, जो जाने मनपर्यय वो।
ज्ञाता दृष्टा तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१३॥

जो मन की जाने माया, वो ज्ञान विपुलमति पाया।
वह महा गुणी तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१४॥

जो दस पूर्वों के ज्ञाता, उनको हम टेकें माथा।
वह निज ज्ञानी तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१५॥

जो चौदह पूर्वी ज्ञानी, संसार सुखों के दानी।
सुख शांति करें तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१६॥

(दोहा)

जो अष्टांगनिमित्त धर, कुशल करे संसार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धियाँ, धार किए उद्धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१८॥

विद्याधर मंगल करें, दें संयम भण्डार ।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१९॥

धरते चारण ऋद्धि सो, जीव न हों संहार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२०॥

बिन अध्ययन ज्ञानी हुए, करे ऋद्धि उपकार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२१॥

तप बल से नभ में करें, दया सहित संचार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२२॥

कभी न मारें जीव को, आशीर्विष को धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२३॥

नहीं देखते रोष से, दृष्टिर्विष को धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२४॥

(बड़ी चौपाई)

करें कठिन तप लेकर दीक्षा, भक्तों को दें संयम शिक्षा।
पूज्य उग्रतप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २५॥

कर उपवास चमकती काया, यही ऋद्धि का अतिशय भाया।
पूज्य दीप्ततप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२६॥

कर आहार निहार न होता, चमत्कार तप बल से होता।
पूज्य तप्ततप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२७॥

महा महा अनशन तप करते, उज्ज्वल जिनशासन को करते।
पूज्य महातप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२८॥

घोर घोर जो करें तपस्या, सारे जग की हरें समस्या ।
पूज्य घोरतप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २९॥

ऋद्धि घोरगुण जब प्रभु प्रकटा, सबके शोक वियोग नशाए।
पूज्य घोरगुण ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३०॥

(हाकलिका)

जगत विनाशक पाकर बल, करें न घात करें मंगल।
घोरपराक्रम के स्वामी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३१॥

महा अघोर ब्रह्म गुण को, करें तपस्या निज पर को।
बनें अघोरब्रह्म ज्ञानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३२॥

जिनकी छूकर काया को, स्वस्थ निरोगी काया हो।
आमर्ष-औषधि वरदानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३३॥

खेल्ल थूक कफ आदि रहे, हरते तन की व्याधि रहे।
खेल्ल-औषधि कल्याणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३४॥

बूँद पसीना जल्ल कहे, तप से हरते शल्य रहे।
जल्ल-औषधि सुखदानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३५॥

मल मूत्रों ने रोग हरे, तप से सुख संयोग भरे।
विप्रुष-औषधि निजध्यानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३६॥

छूकर तन को पवन चले, जीवों के हों भले-भले।
सर्वौषधि अन्तर्यामी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३७॥

बिना थके श्रुत का चिंतन, एक मुहूरत में मंथन।
कहे मनोबल जिनवाणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३८॥

बिना थके श्रुत का वाचन, एक मुहूरत में पाठन।
भजें वचनबल हम प्राणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३९॥

(विष्णु)

मिले ऋद्धि से महा कायबल, जिससे क्षोभ हुआ।
साधक कायोत्सर्ग करें तो, सबको लाभ हुआ॥
कर्म हरण को मिले कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४०॥

नीरस भोजन बने दुग्ध सम, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
पूज्य क्षीरस्रावी ऋद्धि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४१॥

अरस भोज घी जैसा बनता, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
सर्पिस्त्रावी ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४२॥

वेरस भोजन मधुरमिष्ट हो, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
मधुस्त्रावी की ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४३॥

विष भी अमृत जैसा होता, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
अमृतस्त्रावी ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं)श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४४॥

ऋषि भोजन जो शेष बचे तो, महा तपोबल से।
चक्री सेना पेट भरे वा, रहती हिलमिल के॥
शुभ अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४५॥

सिद्धशिला तक जग में जितने, सिद्ध आयतन हैं।
बने बनाए बिना बनाए, सबको वंदन हैं॥
अपनी सिद्ध अवस्था पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥४६॥

वर्धमान बनने दुर्गुण वा, अवगुण त्याग दिए।
चरण शरण उनकी हम पाने, उनसे राग किए॥
वर्धमान चारित्र धारने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ४७॥

जिनशासन में महावीर का, शासन आज चले।
गौतम-गुरु से विद्या-गुरु जी, सबके करें भले॥
जिनशासन का आश्रय पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धरिसिणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप चंदा, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

चन्द्रप्रभु जिनवर करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अन्ध-बन्धमय लोक को, दिए दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ १॥
पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥ २॥
फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिए।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बन्ध किए॥ ३॥
अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥ ४॥

घातिकर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥ ५॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, एसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥ ६॥
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥
चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥ ७॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा—श्री चन्द्रप्रभ दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री चन्द्रप्रभु का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री चन्द्रप्रभु केवलज्ञानी, हो निज-रमणी के तुम स्वामी।
हो चिदानंद के रसिया अन्तर्यामी, हम सबके हो वरदानी॥श्री..
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

श्री चन्द्रप्रभ—आरती

(छूम छूम छना ननना...)

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
श्री चैतन्य चमत्कारी जी, चेतन-धन के अधिकारी जी।-२
सबके हो उपकारी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मणा के नयन सितारे।-२
चन्द्रपुरी अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

आरती

(तर्ज : करें भगत् हो आरती.....)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम-झूम के[२]
झूम-झूम के.....[४]
महासेन माँ - लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम-झूम के[2],
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम-घूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम-झूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
जगह-जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन-सुन के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥
नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम-झूम के[२]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्ग...)

निर्वाण काण्ड

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदि अनन्त, भरत बाहुबलि कर्म हनन्त।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१॥
वासुपूज्य चम्पापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥३॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥४॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।

साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥५॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥६॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागढ़ से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥७॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥८॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥९॥
नंग अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१०॥
रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥११॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१२॥
बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुम्भकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१३॥
स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदीचेलना पूरव हृद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१४॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१५॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१६॥

वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१७॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुये कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१८॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥१९॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गये गुणावा पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२०॥
मथुरा से श्री जम्बूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२१॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कम्वल पहुँचे शिवद्वार।
सुप्रतिष्ठित गोपाचल पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२२॥
यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२३॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥२४॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाये जग का उद्धार, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥२५॥

(दोहा)

जो पाये निर्वाण सुख, सिद्ध अनन्तानन्त।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवन्त॥

॥ इति निर्वाणकाण्ड॥

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥२॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥३॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥४॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥५॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में॥६॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुये व्यसन अंधे में॥७॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥८॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥९॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय कुलाचार न जाना॥१०॥
जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।

या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥११॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥१२॥
या पर से पाप कराये, या अनुमोदन मन भाये।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जायें कषाय सारे॥१३॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥१४॥
जो पाप हुये हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको॥१५॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ॥१६॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी॥१७॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===